कॉम्ट द्वारा प्रतिपादित 'प्रत्यक्षवाद' के सिद्धांत :-

Ans. ऑगस्त कॉम्ट ने प्रत्यक्षवादी समाजशास्त्र की बौद्धिक नींव डाली और संभवतया फ्रांसीसी परम्परा से जिसने सर्वाधिक प्रतिष्ठित शास्त्रीय (classical) समाजशास्त्रियों में सबसे प्रथम समाजशास्त्री दुर्खीम को जन्म दिया। कॉम्ट को प्रत्यक्षवाद का जन्मदाता भी कहा जाता है।

कॉम्ट के अनुसार प्रत्यक्षवाद का अर्थ वैज्ञानिक (Scientific) है। इनके अनुसार सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड (whole universe) अपरिवर्तनीय प्राकृतिक नियमों द्वारा व्यवस्थित तथा निर्देशित होता है। वैज्ञानिक विधियों में कल्पना का कोई स्थान नहीं, यह तो निरीक्षण, परीक्षण, प्रयोग और वर्गीकरण की एक व्यवस्थित कार्य प्रणाली होती है। इस प्रकार निरीक्षण, परीक्षण, प्रयोग और वर्गीकरण पर आधारित वैज्ञानिक विधियों के द्वारा सब कुछ समझना और उसे ज्ञान प्राप्त करना ही प्रत्यक्षवाद है।

कॉम्ट का कथन है कि अनुभव, निरीक्षण, प्रयोग तथा वर्गीकरण की व्यवस्थित कार्य प्रणाली द्वारा न केवल प्राकृतिक घटनाओं का ही अध्ययन संभव है बल्कि समाज का भी क्योंकि समाज भी प्रकृति का एक अंग है। जिस प्रकार प्राकृतिक घटनाएँ कुछ निश्चित नियमों पर आधारित होती हैं, उसी प्रकार प्रकृति के अंग के रूप में सामाजिक घटनाएँ भी कुछ निश्चित नियमों के अनुसार घटित होती हैं, जिस प्रकार धरती की गति, ऋतु परिवर्तन, चाँद और रवि का आगमन, दिन और रात का होना आदि प्राकृतिक घटनाएँ आकस्मिक नहीं हैं, बल्कि कुछ सुनिश्चित नियमों द्वारा निर्देशित होती हैं, उसी प्रकार मानवीय सामाजिक घटनाएँ भी आवश्यक नहीं होती, वे भी कुछ

Kajol

नियमों के अन्तर्गत आती हैं। अतः सामाजिक घटनाएं किस प्रकार घटित होती हैं. उनका क्या क्रम व गति हो सकती है? इसका अध्ययन यथार्थ रूप से सम्भव है। यही प्रत्यक्षवाद का प्रथम आधारभूत सिद्धांत है।

प्रत्यक्षवाद की दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वह अपने को धार्मिक और तात्विक विचारों से दूर रखने का प्रयत्न करता है क्योंकि इनकी अध्ययन-प्रणाली वैज्ञानिक कदापि नहीं हो सकती। प्रत्यक्ष कल्पना या ईश्वरीय महिमा का आधार पर नहीं बल्कि निरीक्षण, परीक्षण, प्रयोग और वर्गीकरण की व्यवस्थित प्रणाली के आधार पर सामाजिक घटनाओं की व्याख्या करता है। अपने अध्ययन कार्य में प्रत्यक्षवादी अनुभव व प्रयोग को अंतोतर कार्य में लाते हैं। इसी प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रत्यक्षवाद किसी निरपेक्ष विचार (Absolute Idea) को स्वीकार नहीं करता है क्योंकि सामाजिक जीवन में परिवर्तन उसी प्रकार स्वाभाविक है जिस प्रकार प्राकृतिक जगत में। समाज या सामाजिक घटनाओं की यह गतिशीलता कुछ प्राकृतिक नियमों, न कि किसी प्रकार की 'इच्छा' द्वारा निर्धारित व संचालित होती है।

कॉम्ट का विचार है कि धार्मिक व तात्विक अटकल पच्चू चिंतन द्वारा प्राप्त निष्कर्ष सत्य भी हो सकता है और काल्पनिक भी अर्थात ऐसे निष्कर्षों का सत्य या काल्पनिक होना 'संयोग' या अनुमान की बात है और इनके सत्यासत्य का निर्णय अगर संभव नहीं तो कठिन तो अवश्य ही है। कुछ भी हो, वैज्ञानिक चिंतन 'संयोग या अनुमान' पर कदापि निर्भर नहीं हो सकता और न ही होना चाहिए। चूंकि प्रत्यक्षवाद एक वैज्ञानिक विचार-प्रणाली है इस कारण इसे यथार्थ होना चाहिए और यथार्थता के क्षेत्र में 'सट्टेबाजी' या अनुमान का कोई स्थान हो ही नहीं सकता।

अतः स्पष्ट है कि प्रत्यक्षवादी प्रणाली के आधार पर किये गए अध्ययन और इसके द्वारा प्राप्त निष्कर्ष वैज्ञानिक तथा विश्वासनीय होते हैं। कॉम्ट का कथन है कि यही कारण है कि धार्मिक तथा तात्विक विचारधारा को वैज्ञानिक लोग अधिक महत्व नहीं देते हैं इनका क्षेत्र अब केवल मात्र सामाजिक अध्ययन तक ही सीमित रह गया है। परन्तु यदि हम सामाजिक अध्ययन को वैज्ञानिक स्तर पर लाना चाहते हैं तो इस सामाजिक अध्ययन के क्षेत्र में भी तात्विक तथा धार्मिक विचारधारा को निकाल देना ही उचित होगा। ऐसे किये बिना समाजशास्त्र विज्ञान नहीं हो सकता।